महिलाएँ सीता की तरह सशक्त होवें

डॉ. वत्सला
व्याख्याता (संस्कृत)
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, झालावाड़-326001

रामायण रूपी पावन गंगा के उज्जवल उत्तंग प्रवाह श्री राम है किन्तु इस पावन गंगा की परम पावनी शांत प्रवाह सीता है। नाना विशेषण-विशेष्यों, उपमान-उपमेयों से विभूषित उसका चरित्र सहस्राब्दियों से भूमण्डल पर अधीन आभासित किया जाता रहा है। उसका चरित्र दुःखों से पुञ्जीभूत तथा दर्ष के क्षणिक उन्मेष से आपूरित है। हर्ष तो मानों निमिषमात्र के लिए आविर्भूत हुआ और दुःख के पारावार में विरोहित हो गया। दुःखों के जाल, विपदा के सन्त्रास की घड़ियों में सीता ने हिम्मत, साहस, धैर्य, आजवल, स्वविवेक, स्वनिर्णय से हर परिस्थिति का सामना किया है।

'सहृदयहृदयाद्वादि' जिस रम्भा रामकथा को वाल्मीकि ने आर्ष महाकाव्य रामायण द्वारा निस्पन्द कराया उस रामकथारूपी अक्षयवटवृक्ष की सीता प्रधान धुरी है। वाल्मीकि ने बालकाण्ड के चतुर्थ सर्ग में स्वयंमेव लिखा है:-

काव्यं रामायणं कृत्स्नं सीतायावनचरितं गहत्।
पौलस्त्यवधमित्येव चकार चरितप्रतः।।

आर्ष महाकाव्य वाल्मीकि रामायण से उपजीव्य को ग्रहण करते हुए प्राक्तन कवियों को सीता का अवहा, सर्वसहा, भीरू, दनि व करूणालसित स्वरूप ही अभिप्रेत रहा है क्योंकि प्राव्य कवियों की दृष्टि नारीवादीयिंतन, नारी अस्मिता, नारी चेतना, महिला सशक्तिकरण जैसे मुद्दो के प्रति केन्द्रित नहीं रही है। सीता को इस स्वरूप में आरेखित करने का कारण तद्युगीन परिस्थितियाँ रही है। किन्तु आधुनिक युग में नारी जागरूकता, नारी अस्मिता, नारीवादी आन्दोलनों के कारण कई महाकवियों ने सीता के चरित्र को तेजस्विनी, आत्मबल से युक्त, निर्भीक, साहसी, दृढ-इच्छाशक्ति की धनी सशक्त महिला के रूप में उकेरा है और यही वास्तविकता भी है। सीता का चरित्र महिला सशक्तिकरण, नारी अस्मिता, नारी चेतना के पूर्वोन्मेव पर पूर्णरूपेण चरितार्थ होता है। आधुनिक युग में नारीवादी चिंतन के परिप्रेक्ष्य में रामायण के गहन अध्ययन विश्लेषण एवं सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक विवेचन से द्योति होता है कि सीता के साथ जो घटनायें दैवयोग वशात् घटित हुई उन घटनाओं, परिस्थितियों के फलस्वरूप संवेदनाओं (मूल मनःसंवेग) एवं मनोभावों से आकंठ निमग्न होने के कारण कहीं पर उसके वचन करूणालसित है तो अन्यत्र उसके

वचन कठोर तथा परिस्थिति के अनुकूल है लेकिन सर्वत्र ऐसा नहीं है। रामायण में सीता सन्दर्भित प्रसंगों के गहनतम, सूक्ष्म श्रवलोकन से यह विलक्षित होता है कि यद्यपि उसका अन्तःकरण आन्तरिक वेदना से गर्माहत है तदपि वह बाह्य रूप (बाह्य चेतना) से बड़ी ही शक्तिशाली, तेजस्विनी, दृढ़इच्छाशक्ति की धनी, आत्मबल, मनोबल से युक्त, आत्मनिर्भर, स्वालम्बी सशक्त नारी है।

सीता को अनला, सर्वसहा, दुःख की प्रतिमूर्ति के जिस मिथ्याहार रूप में उपस्थापित किया गया है उसमें पूर्ण सत्यता नहीं है। वह मौनभाव से आदेश का पालन करने वाली नहीं है। बल्कि उसने तदानीन्तनी परम्परा का अतिक्रमण कर, परम्परा के लीक से हटकर नयी सरणि को आविष्कृत किया है। इस सन्दर्भ में रामायण में कई प्रसंग उपलब्ध होते हैं जिससे यह आभासित होता है कि वह इस भूतल की सर्वोत्कृष्ट स्त्रीरत्न के साथ ही समस्त आर्थाव की बड़ी ही तेजस्विनी, समर्थ, और आत्मबल, धैर्य से युक्त, साहस सम्पन्न महिला थीं कतिपय सन्दर्भ दृष्टव्य हैं- अयोध्याकाण्ड में पति राम के साथ वनगमन के निर्णय पर अटल रहने का प्रसंग हो या युद्धकाण्ड में स्वयं को पतिव्रता सिद्ध करने के लिए अग्नि परीक्षा देने या अरण्यकाण्ड में रावण के गृह में निवास करने या उत्तरकाण्ड में वाल्मीकि आश्रम में निवास करने, पुत्रोत्पत्ति व पालन पोषण के प्रसंग में, हर स्थिति में सीता ने अपने अस्तित्व, आत्मबल, स्वक्षमता, स्वनिर्णय, स्वविवेक तथा दृढ़इच्छाशक्ति को सिद्ध किया है।

अयोध्याकाण्ड में राम को वनवास दिए जाने पर उसके मन में यह विचार उत्पन्न नहीं होता है कि वह राजमहिषी के पद पर सुशोभित नहीं हो पायेगी। ना ही वनवास लिए जाने का विरोध करती है बल्कि स्वयं वन जाने के लिए मिथिला में श्रावित अनेक प्रसंगों व प्रमाणों को समुपस्थाति करती है। (24/5,8,9,13,14,21) वनगमन के औचित्य पर अनेकानेक तर्को को प्रस्तुत करती है। (30/8,9,21) वनगमन के निश्चय पर अडिग रहना सीता के साहस और आत्मबल का परिचायक है। सीता अपने दृढ़ संकल्पों के आगे लेशमात्र भी विचलित नहीं होती। अपनी हठधर्मिता और दृढइच्छाशक्ति के कारण अन्ततोगत्वा वनगमन करने पर सफल मनोरथ हो जाती है। (30/40) राम के प्रति अनन्य अनुराग होने के कारण वह वन के कष्टों की परवाह किए बिना राम के साथ वन जाने के निश्चय पर अटल रहती है। सीता ने मौनभाव से आज्ञा का पालन नहीं किया बल्कि अपनी हठधर्मिता द्वारा तद्युगीन परम्परा में नयी सरणि के बीज का वयन किया। सीता उभयकुलों से श्री सम्पन्न थी। यदि उसे ऐश्वर्य एवं विलास की सुखेच्छा होती तो वह राजमहल में निवास करती या 21वां सदी भाँति 14 वर्षों के लिए अपने पिता के घर में निवास करती।

युद्धकाण्ड में स्वयं को पतिव्रता सिद्ध करने के लिए अग्नि परीक्षा काल में भी सीता ने स्वविवेक से राम के प्रश्नों का प्रतिकार किया है। रावण पर विजय प्राप्ति के उपरान्त सीता के पतिव्रत धर्म पर सन्देह करके राम उन्हें नाना मुक्तियों व नाना उपयों के द्वारा अन्यत्र जाने के लिए आदेशित करते हैं। उनके वाग्प्रहारो से सीता की अन्तरात्मा बड़ी

ही उद्विग्न हो जाती है। वे करूणक्रन्दन करने लगती है किन्तु अपने नेत्रों के प्रवाह को रोकते हुए, नम्रमापूर्वक अपने प्रेम व विश्वास की दुहाई देती हुई राम के प्रश्नों का बड़ी ही निर्भीकता के साथ उत्तर देते हुए कहती है कि जब आपने लंका में मुझे देखने के लिए हनुमान को भेजा था उसी समय मुझे क्यों नहीं त्याग दिया। हनुमान के मुख से आपके द्वारा परित्याग की बात सुनकर तत्काल ही अपने प्राणों का परित्याग कर दिया होता और आपको युद्ध आदि का व्यर्थ कष्ट नहीं उठाना पड़ता (116/11,12,13) सीता ऐसे उपालम्भपूर्ण वचनों से राम की भर्त्सना करती है।

अरण्यकाण्ड में रावण द्वारा अपहृत सीता ने भारतीय संस्कृति, लोक व राजमर्यादा के अनुरूप अपनी चारित्रिक सुदृढ़ता को स्थापित किया है। यदि वह मर्यादा का ध्यान न रखती तो लंका की सम्राज्ञी कहलाती। आदर्श का निर्वहन करने के कारण उसे अग्नि परीक्षा से गुजरना पड़ा। सीता को अपनी भार्या बनाने के लिए रावण अनेक सुलोभनों को देता है तथा निराशा व हताशा से परिपूर्ण स्वदम्भ युक्त वचनों से सीता को भयाक्रान्त करने का प्रयास करता है जिससे सीता आत्मसर्मपण कर दें। किन्तु रावण के अहंकार व दुःसाहसपूर्ण वचनों का सीता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। वह बड़े ही धैर्य, साहस एवं स्वविवेक से उसे (रावण को) प्रताड़ित करती है। (56/5,12,13,17) अज्ञात, अनजान लंका के स्थानों तथा पुरवासियों एवं स्वजनों के साथ न होते हुए भी सीता रावण के समक्ष कुछ भी कहने से डरती या कतराती नहीं। वह रावण से कहती है कि तू इस सीता शून्य जड़ शरीर को बाँधकर रख लें या काट डाल। मैं स्वयं ही इस शरीर और जीवन को नहीं रखना चाहती। मैं इस भूतल पर अपने लिए निन्दा या कलंक देने वाला कोई कार्य नहीं कर सकती (56/21,22) सीता बेखौफ होकर रावण को धर्षित करती है।

उत्तरकाण्ड में राम द्वारा परित्यक्त किए जाने पर वैदेही ने राम के लिए अपशब्दों या कटुवचनों का प्रयोग नहीं किया है। आपन्नसत्वा होने के पर पति द्वारा निर्वासन दिए जाने पर सीता विचलित नहीं होती। ना ही कोई बुरा विचार उसके अन्तसर में उभरता है। नेत्रों से अश्रुओं का प्रवाह प्रवाहित होता है। अश्रुओं के प्रवाहित होने से चित शान्त हो जाता है यही कारण है कि वह वाल्मीकि आश्रम में शांत भाव से निवास करती है। महर्षि वाल्मीकि की सुरक्षा व संरक्षा के मध्य सीता के आत्मविश्वास व मनोबल का ह्रास नहीं हुआ। राजकुल का वैभव रहते हुए भी राजसी वैभव से रहित, राजमहिषी होते हुए भी पद की गरिमा से विहीन, विवाहित होते हुए भी पतिविहीन, स्वजनों के होते हुए भी स्वजनों से रहित ऐसी विषम परिस्थिति में कालयापन करते हुए सीता ने सर्वगुणोपेन शूरवीरों को जन्म दिया। एकाकी ही पुत्रों का सर्वविधि पालन पोषण किया। किन्तु करूणानिधान प्रभु श्रीराम ने उनको ऐसे विस्मृत किया कि कभी भी स्मृत नहीं किया।

इन उद्‌हरणों से ज्ञात होता है कि सीता इस धरा की सबसे सशक्त महिला थी। निर्वासन, अपहरण, आरोपण, परित्याग, विदग्ध इन सकल परिस्थितियों में सीता अबला नारी नहीं थी बल्कि दृढ़इच्छाशक्ति वाली, आत्मबल, आत्मक्षमता, सहनशील एवं स्वविवेक से निर्णय लेने वाली त्याग और समर्पण से युक्त तेजस्विनी नारी थी। परीक्षाओं की पराकाष्ठा से गुजरते हुए उसने हर तविश को सहा। अपने विवेक, मनोबल, धैर्य साहस, सहनशक्ति से मर्यादा को अक्षुण्ण बनाए रखा। मर्यादा की सीमा का उल्लंघन नहीं किया। महिला सशक्तिकरण, नारी अस्मिता, नारी चेतना के लिए सीता का चरित्र उत्तम (आदर्श) निदर्शन है। आधुनिक युग में नारी जागृति जैसे मुद्‌दों व आन्दोलनों के कारण महिलाएँ पारिवारिक समस्याओं व कठिनाईयों को लेकर गली-मोहल्लों व सड़कों पर आ जाती है। मर्यादा का अतिक्रमण कर तमाशा बनाती है। आधुनिक युग में महिलाओं को सीता के चरित्र से सीख ग्रहण करना चाहिए। सीता ने दुष्कर व विकट स्थिति में भी सामञ्जस्य स्थापित किया। अपने विवेक, निर्णय, आत्मबल, आत्मक्षमता, सूझबूझ से हर परिस्थिति में समाधान निकाला कोई से हल्ला खड़ा नहीं किया।